संस्कृत नाट्यसाहित्य में पति - पत्नी संबंधितस्थिति

डो.राधाबहन एम. पटेल•

संस्कृत नाट्यसाहित्य में कौटुम्बिक आदर्शो -आस्थाए एवं विश्वासों की धूप-छाव में सदस्यों के अप्रतिम प्रीति व सौहार्दमय संबंधो की कोमलता व पवित्रता के स्वस्थ एवं सुंदर चित्र चित्रित किया है | और कुटुम्ब की संगठित संस्था के ऐक्य को विखंडित करने में सहायक परिस्थितियो एवं समाज स्वीकृत माध्यमो के विपरीत कामेच्छा पूर्ण करने के लिए अनेक पत्निओं के साथ सम्बन्ध, बहुपत्नीत्व ,ईर्षा ,कलह एवं पत्नी परित्याग आदि परिस्थिति का वर्णन किया गया है|

संस्कृत नाटकों में सामान्य लोगो का कौटुम्बिक जीवन का चित्रण अति अल्प प्रमाण में मिलता है| यहाँ कुछ अपवादों को छोडकर राजपरिवारो का वर्णन अधिक प्रमाण में दिखाई देता है| राजपरिवारों में प्रायः पति-पत्नी के बीच मधुर सम्बन्धो का अभाव एवं स्त्रियों की इच्छाओ का दमन किया जाता है| यहाँ स्त्रियों की स्थिति सिक्के की दो पहिये की तरह दिखाई देती है| जैसे की अभिज्ञानशाकुन्तल ओर अविमारक नाटक में कन्या का आचरण कुल की मर्यादा के प्रतिकूल है| वे विवाह पूर्व पितृकुल में ही योवन सुलभ आवेग से वशीभूत होकर अपने प्रेमी से यौन सम्बन्ध स्थापित कर लेती है| जो धर्मशास्त्रीय या सामाजिक द्रस्टीसे अनुचित है | और अविमारक नाटक में कुरंगी का अविमारक नामक अन्त्यज के प्रति दुर्निवार अनुराग व् समागम के लिए गुप्त मिलन मर्यादा के विरूद्ध है |यहाँ दोनों प्रेमियों कों मिलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाली धात्री को इससे कुल का नस्ट होने का भय है ,वो कहती है |कि-अहो

HAIM-PRAPA : A Research Journal of the Department of Sanskrit & Bharatiyavidya Bhavan, Hemchandrachary North Gujarat University, Patan. Vol. IX. 2018. P. 94-99

• जी.डी. मोदी आर्ट्स कोलेज, पालनपुर बनासकांठा.

संकटतया कार्यस्य यधेव" क्रियते राजकुलं दूषितं भवति | |[17] यहाँ नाट्यकारो ने पुरुष की विलासप्रवृत्ति को जिम्मेदार ठहराया है पति-पत्नी के कलह समजौते से हल किया जाता है| यहाँ स्त्री ने समर्पण किया है, तो पुरुष ने दुष्ट पत्नी को मनाया है| और सम्मान होकर उसकी भावनाओं का आदर किया है |

संसकृत साहित्य के इतिहास[18]अनुसार नाट्यकार समाज के विशुद्ध वातावरण मे विचरण करता था | समाज के सुखदु:ख की भावना उसे स्पर्श करती थी| वह दीनदुखियों की दीनता पर आँसु बहाता था, तो सुखिजीवो के सुख पर रिजता था | और स्वयं की सूज से तत्कालीन ,सामाजिक ,आर्थिक ,धार्मिक एवं राजनेतिक परिस्थितियों का अध्ययन करके अनुभूत जीवन को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रखकर वर्णन करता है, और इसी समय की स्थितिको स्वीकारते है |

मीमांसा दर्शन[19] अनुसार कौटुम्बिक जीवन को सफल या सुखद बनाने में स्त्री- पुरुष का समान महत्व होता है | पुरुष रक्षण- पोसण करता है तो स्त्री भी सहायिका या संगीनी बनती है | नारी वृत का व्यास है तो नर उसकी परिधि है | इस तरह स्त्री के जीवन से गुणित होकर पुरुष का जीवन चलता है | यही पति -पत्नी गृहस्त जीवन का सार- संगीत है | संस्कृत नाट्य साहित्य में राजपरिवारो का उल्लेख अधिक मिलता है जैसे की राजाउदयन, चंद्रपाल, विद्याधरमल्ल आदि राजाओ में पर स्त्री लोलुपता दिखाई देती है | यहाँ स्त्री के प्रति निष्ठा का आभाव है | इसी लिए दाम्पत्य जीवन दुखमय दिखाई देता है | ओर राजपरिवारों में पति की वासना वृति से आंतरिक कलह की स्थिति उत्पन हुई -मालविकाग्निमित्रम, विक्रमोर्यवशियम, रत्नावली,कर्पूरमंजरी ,विदवशालभंजिका आदि नाटकों में यह समस्या दिखाई देती है | नाट्यकारों ने नूतन प्रणय से उत्पन्न आंतरिक कलह को स्त्रियों से विरोध का रास्ता छुडवाकर दूर किया है| और मधुर संबंधो का वर्णन जैसे कि भासके स्वप्नवासवदत्तम में उदयन ओर वासवदत्ता , अविमारक में कुन्तिभोज और देवी एवं प्रतिज्ञायोगंधरायण में महासेन और अंगारवती के मधुर संबंधो का उल्लेख मिलता है| यहाँ प्रेम की पराकाष्ठा दिखाई देती है | परस्पर आदरभाव करते है, ओर एकदूसरे से सलाह सूचन करते है | [20] एक दुसरे का दु:ख बीना कहे परस्पर समजते है| प्रतिज्ञायोगंधरायण में कहा है कि-दुहितु: प्रदानकाले दु:खशिला हि मातर: | तस्माद दैवी तावदाहूयताम [21] | और मुरुछकटिक में चारुदत्त और